

पुराकल्पन शब्दनी संज्ञा, स्वरूप अने परिभाषानो विचार—विमर्श

Dr. Mahesh J. Vadher

M.A., M.Phil., Ph.D.

पुराकल्पन : संज्ञा—अर्थविवरण :

सर्जक चिंतन करे छे तेना सर्जन माटे. आधुनिक सर्जक व्यक्तिना जीवननी आंतर क्रियाओ अने अना मनोभावजगतने असर कर्या वगर रही शकतो नथी. प्राचीन सर्जकनां मुख्य हथियार हतां : धर्म, दैवीशक्ति, देव-दानव, सत्-असत्, ऐतिहासिक (पराक्रमी) पात्रसृष्टि, विशाल प्रकृति, सृष्टि वगरे. समय मानवने शुं नथी बनावतो ? प्रागैतिहास, ईतिहास अने वर्तमान, मध्ययुग अने अर्वाचीनयुगमां केटलो तफावत छे ? आजदिन सुधी विश्वस्तरीय, देशनी आंतर माळखाकीय, प्रादेशिक धटनाओ वच्चे मानवी परिवर्तनने स्वीकारतो चाल्यो जाय छे, तेनी वच्चे साचो सर्जक समयानुसार तेना सर्जनमां परिवर्तन लावतो जाय छे. आजना आधुनिक नगरजीवननी दोडधाममां मानवीने तेना भौतिक सुख सगवडोने संतोषवानी वृत्ति तरफनी गतिदोरमां ज समय मळतो नथी, त्यां जीवन विकासनी तो वात ज अेक बाजु रही जाय तेम छे. आजे आपणे जाहेर जनतानां ठेर ठेर थतां आंदोलनो अने कर्मचारी वर्गोनी थती हडताळो, मजूर वर्गनो थतो मालिक प्रत्येनो आक्रोश, जूथो वच्चे थती अथडामणो, कोमी रमखाणो वगरेमां आधुनिकतानी छांट भळेली जोई शकीअे छीअे, अहीं नथी गांधीजीना उपवासनी वातो, नथी सत्याग्रहोना हठाग्रह, नथी कोई आझाद हिंद फोज, नथी न्यायना क्षेत्रमां कोई जहांगीर, नथी सत्यना पुजारी हरिश्चंद्र, नथी कोई कुरुक्षेत्रमां आतंक मचावी देनार अर्जुन, नथी कोई विदुर के नथी कोई सामे पक्षे रहीने पण विरल शक्तिरूप भीष्म के आत्मसमर्पण करी देनार कर्ण. आ समये आधुनिक साहित्यमां सर्जको पासेनां हथियारोमां जोईअे तो कामवासना, मोह-माया, वि-नायक तरफनो प्रेम, बेवफाई, आंतरिक कोमी रमखाणोनी छोळो, मर्यादा विरुद्धना लेखो, प्रेम पत्रो, कल्पनाथी मढेलां रुपकडां काव्यो वगरेनुं थोकबंध साहित्य विकासना पंथे छे, त्यारे आपणी परंपराओ अने प्राचीन ग्रंथोमां पडेलुं "हीर" लईने केटलाक महान सर्जको तेनी कल्पनाना रंगे अेवुं रंगे छे के वास्तविकतानी भूमिकामां अे प्राचीन तत्त्वनो सुयोग सधाय छे अने सर्जन पामे छे महान कृति जेम के युलिसिस, सरस्वतीचंद्र वगरे. आवी कृतिओमां पुराकल्पननो विनियोग थयेलो जोवा मळे छे. **Myth** विशे चर्चा करतां डॉ. प्रवीणभाई दरजी कहे छे : "आ "मिथ" (**Myth**) छे शुं ? आवो प्रश्न जो अेना तद्विदो समक्ष करवामां आवे तो भाग्ये ज अेनो अेक सरखो उत्तर मळे. अेवुं पण बने के अेमांथी केटलाक उत्तर आपवानुं टाळे, अने जे थोडा अेके उत्तर आप्या

होय ते पण संतोषकारक न होय. संभव छे के उत्तर आपनार पण कयारेक पोताना उत्तरथी पूरेपूरो राजी न होय ! "मिथ" विशे चर्चा करनाराओ, अेमां ऊंडे सुधी खूपी जनाराओ के ते विशे सतत खणखोद करनाराओ धणीवार गुंचवाई जता जोवाय छे. कोईक कोईक विचारणाना छेक ज अंतिम बिंदुअे पहाँची जता होय छे, तो कोईक अेना मर्मने उद्धाटित करवा ताणीतूसीने अेने दूर दूर सुधी खेंची जता होय छे. सेन्ट ओगस्टाईने पोतानी मुंझवण व्यक्त करतां आथी "मिथ" ना अर्थघटननी बाबते साचुं ज कह्युं छे : "कोई मने "मिथ" शुं छे ?" अेम पूछे नहीं तो अे विशे हुं सारुं जाणुं छुं, : पण जो कोई अे विशे पूछे अने अेने अभिव्यक्त करवानो प्रयत्न करुं तो मुश्कलीमां मुकाई जाउं". "मिथ" संज्ञा, अेनुं अर्थघटन आम पोते ज अभ्यासीओ माटे अेक रहस्यमय "मिथ" बनी रहे अेवी ने अेटली संकुलता दाखवे छे !"

आम, **Myth** (पुराकल्पन) संज्ञानुं अर्थविवरण करवु थोडुं कपुं तो छे ज, छतां तेनी समज मेळववी पडशे अे पण स्वीकारवुं पडशे. सरळ शब्दोमां कहीअे तो "पुरा" अेटले "जे थई गयुं छे ते" अथवा "प्राचीन" अने कल्पन शब्द माटे, सर्जक अे थई गयेली धटना के पात्रमां पोतानुं कल्पन उमेरण करे ते अेटले पुराकल्पन. परंतु सर्जक अहीं जे कल्पन करे छे ते वास्तवने अनुषंगे होय अे जरुरी छे.

आम पुराकल्पन अेटले पौराणिक के प्राचीन दंतकथाओ **Myth** (मिथ), आख्यायिकाओ, दृष्टान्तकथाओ वगरेनी सहायथी वर्तमान जीवनना कोई ने कोई अनुभवने अतिशय असरकारक रीते अभिव्यक्त करवानी रीति.

पुराकल्पनमां सर्जक पोताना संवेदननी सादृश्यता माटे बाह्यजगतमां नहीं, परंतु पौराणिक साहित्य तथा ईतिहासमां पोतानी नजरने फेरवे छे. तेमांथी पोतानी वातने व्यक्त करी शके तेवी धटना शोधे छे, अने तेनो विनियोग करे छे. आम पूर्वपरिचित अेवी पौराणिक सामग्रीने नवा, आधुनिक अर्थमां, नवीन संवेदनने व्यक्त करवा ज्यारे ज्यारे प्रयोजे त्यारे त्यारे पुराकल्पननो विनियोग थयो गणाय. आ पुराकल्पन मोटा भागे धटनाओना निरुपणमां प्रयोजातुं होय छे. ऊर्मिओना आलेखन करतां धटना के क्रियाना आलेखन माटे तेनो उपयोग थाय छे. धणी वखत आपणे सांभळीअे छीअे :

पुराकल्पन आम कथानो प्राचीन प्रकार छे, जेमां मानव जीवननां स्थूल सत्यो अने धटना प्रवाहोने ओळंगी जई मानवसंबंधोने कोई अलौकिक, अति प्राकृतिक अने अमानवीय

शक्तिओ साथे जोडी दर्ईने मानवजातनी आम परंपरागत स्वप्नोनी गंभीर आलोचना करे छे.

आ "Myth" पुराकल्पन विशे धणा सर्जको विवेचकोअे पोतपोतानां मंतव्यो आप्यां खरां, परंतु हजु सुधी Myth ने बे चार के दश-बार शब्दोनी व्याख्यामां बांधी शकायुं नथी, अे ज तो अेनी विशेषता छे. छंद, अलंकार, समास, द्विरुक्त प्रयोगो, प्रतीक वगैरे शाब्दिक बंधनमां आवी जाय तेवां कृतिने उत्कृष्ट बनावतां सर्जकना हथियार छे, जे सर्जक धारे त्यारे तेनो अजमायश करी शके, परंतु "Myth" शब्दने समजवा माटे तेनुं विश्लेषण करता - शाखा प्रशाखाओथी धटाटोप अेवुं वृक्ष बने के जेमां मानवसंस्कृति, समाज, प्रेमतत्त्व, नृवंशविज्ञान, मनोविज्ञान, धर्म, भाषा, ईतिहास, भाषाविज्ञान वगैरे हरितकणो बनी ओळधोळ बने अने ते बधुं ज जेना आधारे ताजगीमय रहे तेवा पाणी माटी खातरथी मिश्रित जमीन समान आधुनिक युग साथे ऊभय जोडाण थाय छे."

❖ 'Myth' शब्दनी संज्ञा परिभाषानो विचार-विमर्श :

आगळ जोई गया तेम 'Myth' अंग्रेजी शब्द छे, गुजरातीमां तेना माटे सर्वस्वीकृत शब्द "पुराकल्पन" रह्यो छे. आ संज्ञानो विचार विमर्श करतां डॉ. प्रवीण दरजी नोंधे छे :

" "मिथ" 'Myth' अंग्रेजी शब्द छे. Myth शब्दको मूल स्रोत ग्रीक शब्द "मुथोस" Mythos मां अने लेटिन "मिथस" Mythas मां छे. केटलेक स्थळे Muthos ने बदले "मिथोस" के "माईथोस" Mythos अेवो शब्द पण मळे छे. ग्रीक भाषामां अेनो अर्थ छे वाणी, कथा, वार्ता FabZle, tale, talk के speech अेवो अेरिस्टोटले कथाविधानना (fabZle) अर्थमां अेनो प्रयोग कर्यो छे. "मिथ" ने 'logos' साथे अने पाछळथी 'historia' साथे सीधो विरोध रह्यो छे. "लोगोस" के "हिस्टोरिया" "संगति" नो "वास्तव" नो "तथ्य" नो अर्थ व्यक्त करे छे तो "मिथ" वास्तवमां जे खरेखर अस्तित्व धरावतुं नथी अथवा तो "वास्तवको विरोध करती कोईपण वस्तु अेवो अर्थ अभिव्यक्त करे छे. (अेन्सायकलोपीडिया ब्रिटानिका) ध न्यु लेकसी कोन वेबस्टर डिक्शनरीमां पण Myth नो अेक अर्थ "जूनी" परंपरागत वार्ता अथवा किंवदन्ती अेवो आप्यो छे. आगळ उपर अेनो प्राचीन मान्यताओने व्यक्त करती काल्पनिक अथवा तो अतिमानवीय कथा" रुपे उल्लेख कर्यो छे. "आदिम मनुष्यने, अेना विभावनने, अेनां मूळने प्रत्यक्ष करती" वार्तारुपे जोवानो पण अे विवरणमां प्रयत्न छे. Myth उपरथी बनेला Mythic अथवा Mythology के Mythomania जेवा शब्दोमां "ईश्वर साथे संबंधित", "लोकोना ईश्वर के अधिनायको साथे संबंधित" के "जुतुं बोलवानी वृत्ति" जेवी अर्थच्छायाओ पण प्राप्त थाय छे. ओकसफर्ड डिक्शनरीमां "अमानुष के अधिमानवनी संडोवणीवाली काल्पनिक कथा" तो "प्राकृतिक धटनाओने प्रचलित आदर्शरुपे मूर्त करती कथा" अथवा "काल्पनिक व्यक्ति के वस्तु" अेवा अर्थो मळे छे. कोईके Myth ना उद्भवमां

संस्कृत "मिथ" नी शक्यता जोई छे. जेनो अर्थ छे : रहसि "जेनाथी रहस्य सर्जाय छे" अर्थात् अेकांत, निर्जनता. आवा अर्थधटनकारो "मिथ" मां "मिथुन" नो संकेत पण निहाळे छे ! आ संकेतना समर्थनमां संस्कृत साहित्यनी ललित रचनाओ अने आपणां प्राचीन मंदिरोनां शृंगारिक स्थापत्यो तरफ अेवाओ आपणुं □यान दोरे छे. "मिथ" ने मिथुन साथे भले जोडीअे, "मिथुन" मां स्त्री पुरुषना जोडकानी प्रकल्पनानो स्वीकार करी कलोड लेवी स्ट्राउस जेने "विरुद्धोनां युग्म" अेम कहे छे. अेनी साथे अेने बंध बेसतुं पण भले लेखीअे. वास्तवमां अेने "मिथ" ना अनेक अर्थमांना अेक अर्थ तरीके ज महत्त्व अपाय कारण के जीवनना अनेक क्रिया कलापोमां "मैथुन" अेक अंश छे, सर्वस्व नथी. अेटले "मिथ" ने "मिथुन" ना सीमित वर्तुळमांथी बहार आवीने जोवुं रहे छे. संस्कृतनो अन्य समीपवर्ती शब्द छे मिथ्या. मिथ्या अेटले असत्य पण हकीकतमां संस्कृतना आ शब्दोने आपणे Myth साथेना □वनिसाम्यथी वधु महत्त्व आपी शकीअे तेम नथी. अेना कुळ-मूळ ग्रीक लेटिनमां ज रह्यां छे.

"पुराकल्पन" माटे अंग्रेजीमां " Myth' शब्द छे. ते पुरावृत्तो, दंतकथाओ, पुराणोनी कथाओनो सूचक छे. Myth उपरथी Mythology अने Mythological stories आवे छे. ते सधळी पौराणिक कथाओनी सृष्टि छे. Myth नो प्रचलित पर्याय "पुराकल्पन" छे. हरिवल्लभ भायाणी "देवकथा" पर्याय आपे छे. पण Myth अे मात्र देवोनी ज कथा नथी, दानवो, यक्षो, किन्नरो, अप्सराओ, भूत-प्रेत, नाग वगैरेनी अेटले के दिव्यने अतीन्द्रिय, अलौकिक ने पारलौकिक, अद्भुत अने अवास्तविक अेवी मायावी सृष्टि छे. आदिमतावादी स्वप्नो, परीकथाओ, आद्यरूपो आदिम श्रद्धाओ ने आदिम पापोनी दुनिया छे. दरेक देश प्रजा, संस्कृति पासे अेना पुरावृत्तोनी संपत्ति होय छे. प्राचीन संस्कृतिना अे पुरावृत्तोमां ईश्वर, देव, देवीओ, दानवो, राक्षसो, अप्सराओ, परीओ, यक्षो, किन्नरो, गांधर्वो, पशुपंखीओ, जादुई पदार्थो, जडीबुटीओ, सृष्टिसर्जनने प्रलय, जन्म, मृत्यु, पाप, पुण्य, स्त्रीनी फळद्रुपता वगैरे विशे जातजातनी कथाओ होय छे. पौराणिक साहित्य अे द्वारा धर्मतत्त्वको बोध करे छे. आ पण प्रजानो वारसो अने वैभव छे. अेमां जीवन जगतनां रहस्यो, श्रद्धाओ, अंधश्रद्धाओ, वहेमो, विचित्रताओ होय छे. पुरावृत्तोना चोक्कस अर्थ पण छे. आ प्राचीन पुरावृत्तोना भंडारनो उपयोग करीने, तेमां अर्वाचीन अने आधुनिक जीवन जगतना ज्ञान विज्ञानना अर्थो संभरीने आधुनिक सर्जको नवी नवी संरचनाओ करे छे, तेने पुराकल्पन कहेवामां आवे छे."

स्वरूप :

कोईअे पुराकल्पनने सांकडा परिधिमां पूरी देवा कोशिष करी छे, तो कोईअे तेनो बुहद् स्तर उपर विचार-विमर्श कर्यो छे. आपणे आगळ चर्चा करी गया तेम आ Myth छे शुं ? तेना जवाबमां हजु सुधी कोई तेने बे-चार शब्दोनी व्याख्यामां बांधी शकयुं नथी. जुदा जुदा अभ्यासीओ पोतपोतानी सूझ प्रमाणे अभिप्रायो आपता रह्या छे, अने तेनां तारणोने काईने,

खास करीने ग्रीक साहित्यमा तेनो बुहद् स्तरे पण विस्तार थतो रह्यो छे, आपणे त्यां गुजराती साहित्यमां हजु तेनां संशोधने अने मानवकृतिओमां पडेला आ Myth ना तत्त्वनी खोज अधूरी ज रही जणाय छे. जेवुं भाषाना उद्भव विशेनुं चिंतन अने संशोधन अभ्यासीओने तेना मूळ सुधी पहोंचाडवामां हंफावे छे, तेवुं ज पुराकल्पन विशे, तेना उद्भव विशेना संशोधनमां थयुं छे. पुराकल्पनना उद्भव विशेनी वात करतां डॉ. प्रवीण दरजी नोंधे छे :

“मानवसंस्कृतिनो आरंभकाळ धणी बधी रीते मानव माटे केवळ अनुभव न हतो विस्मयभावथी अे बधुं नीरखवानो समय हतो. मेसोपोटेमिया, अशिया, सीरिया, मिसर, ईरान, माईनर, सिंध वगैरेमां मानवसभ्यताअे अेना उषःकाळनी पहेली कोर काढी हती. ईसुना आगमन पूर्वे, हजार वर्षो पहेलां, शब-संस्कार तेमज कृषिउत्पादकता अने अन्य कर्मकांडोनो विकास प्राप्त अवशेषो उपरथी कल्पाय छे. पण अेना पेला अनुभवजगतने अने जे कई मानव तरीके ते विकास करी शकयो छे, अेने अभिव्यक्ति मळे छे. मानवसभ्यताना बीजा तबक्कामां आ संक्रांति काळमां सौप्रथम अेक सबळ तत्त्वरुपे प्रकृति अेनी सामे आवीने ऊभी रहे छे. प्रकृति साथेना पोताना संबंधोने अनुभवोने रुपक के रुपककथारुपे ते अवतारे छे. देव-देवीओ के अलौकिक सत्ताना प्रभाव नीचे जीवता मानव समुदायने माटे आ कथा वार्ता मोटी भेट बनी रहे छे. मानवसभ्यताना विकासना आ वळांके ज आम पुराकल्पननो उद्भव थयो. प्रकृतिनी साथे अेनुं मनोजगत पण क्रमशः संकळावा लाग्युं, सूर्य, चंद्र, तारा, ग्रहो, प्रकाश-अंधकार, पक्षीओ, पहाडो, नदी, सागर, जळ, अग्नि, वृक्ष जेवां तत्त्वो पण धीमे धीमे अेनी चेतनामां प्रवेश पामे छे, अेना विशे ते विचारतो थाय छे. मृत्यु अने जीवन पण तेना रसना विषयो बन्या. आ पार्थिव अपार्थिव तत्त्वो पंचेन्द्रियो द्वारा जेटलां ने जेवी रीते स्पर्शाया अथवा तो मनोगतमां अे अनुभवोनी जे जे रीते छापो उपसती गई अेने ते ते रीते अे रुपको प्रतीको द्वारा मूर्तरुप आपतो गयो. लोकशास्त्रना तजज्ञो अने नृवंशशास्त्रीओ अेम माने छे के “पुराकल्पन” Myth आमांथी जन्यां.

पुराकल्पननो विचार करीअे छीअे त्त्यारे समग्र विश्वना संदर्भमां ग्रीक अने भारतीय पुराकल्पनो कईक जुदां ज तरी आवे छे. मात्र सर्जको ज नहीं, संवेदनशील मानवो पण आ पुराकल्पनोथी लुब्ध थया छे. ते ते देशनी संस्कृतिनो आखो विकास आलेख अेवां पुराकल्पनोमां वांची शकाय छे, पण दुर्भाग्ये पुराकल्पनने “अबौद्धिक” तरीके ओळखवानुं वलण पण अढी हजार वर्ष पूर्व ग्रीकथी ज शरु थयुं हतुं ! पुराकल्पन विशे पाछळथी जे केटलीक भ्रामक मान्यताओ ऊभी थई ते आ प्रकारना ग्रीक वलणने लईने ज. होमरनां पुराकल्पनोने अेक तत्त्वचिंतके अे काळमां आ संदर्भमां ज उवेख्यां हतां. ई.स. पूर्वे (पांचमी-छठी सदी) झेनोफेनसे (Xenophanes) होमर अने हेसिअडे ईश्वरनी अमर्त्यतानी वात करी हती तेनो सदंतर नकार कर्यो हतो. पूर्णतःधार्मिक लेखक कही शकाय तेवा पिन्डरे पण “अविश्वसनीय” (IncredibZle) पुराकल्पनो उपर चोकडी

मारी दीधी हती. ज्यारे प्लेटो जेवा कवि-कविता विरोधी चिंतके पुराकल्पननी भूमिकानो स्वीकार कर्यो हतो ! ई.स. पूर्वे त्रीजा सैकामां हेमेरसे (Euhemerus) तात्त्विक यात्राना स्वरुपमां “रोमान्स” नुं प्रकाशन करेलुं जेमां तेणे सिद्ध करी बताव्युं के प्राचीन ग्रीक “देव” अे बीजुं कोई नहीं पण ते राजा अथवा मानवी ज हतां. हेमेरसनो होमरकथित “देव” ने न्यायी ठेरववा आ अेक “बौद्धिक” मार्ग हतो. प्रागैतिहासिक के ते पछीना संक्रान्तिकाळमां जे मानवीओअे पोतानां उज्जवळ कार्योथी सिद्धि हांसल करी हती ने जे आत्मिक विकास दाखव्यो हतो अेवा समर्थ उन्नत मानवीओ ते ज रुपान्तरे देव आ अर्थघटन पुराकल्पनने, वास्तव, ईतिहास अने मानवचेतना साथे जोडी आपनायुं, महत्त्वना प्रस्थानरुप बनी रह्युं छे. पुराकल्पनने साची दिशामां जोवा समजवानी अहीं अेक सन्नद्ध भूमिका पडेली छे.”

पश्चिमना साहित्यमां अने आपणा प्राचीनग्रंथोमां सृष्टि निर्माण विशेनां अनेक पुराकल्पनो छे. ज्यारे ज्यारे पृथ्वी पर वसता मानव समुदायमां पापाचारो वधता जाय छे, त्त्यारे त्त्यारे आवां पुराकल्पनो तेने रस्तो आपतां होय छे. प्रकृतिनां तत्त्वो, सूर्य, चंद्र, समुद्र वगैरेने मानवी विराट शक्तिना प्रतीक तरीके जोवा लाग्या, अे परथी प्रकृति विशेनां पुराकल्पनो उद्भव्यां जेम सृष्टि निर्माणनां पुराकल्पनो जोवा मळे छे, तेम पृथ्वीना प्रलयनां, जगतना विनाशनां पण पुराकल्पनो जोवा मळे छे. जगतना विनाशनी साथे तेना पुनःनिर्माणनां पण पुराकल्पनो जोवा मळे छे. आकाशने पुरुषनुं रुप आपवामां आवे छे, ज्यारे पृथ्वीने स्त्री तरीके कल्पना करवामां आवे छे. आम जिंदगी-मृत्यु, पुरुष स्त्री, मानव ईश्वर, पृथ्वी आकाश, देव दानव जेवा असंख्य पुराकल्पनो जोवा मळे छे.

पुराकल्पन “मिथ” नी रचनाने मानव ईतिहास, प्रागैतिहासिक पौराणिकता अने सांस्कृतिक विकास साथे गाढ संबंध छे. अर्वाचीन वैज्ञानिक बौद्धिक युगमां पुराकल्पन अवास्तविक लागे छे. म□ययुगीन सामंतशाही वातावरण सुधी पुराकल्पन सर्जाया हवे तेनुं स्वरुप बदलातुं जाय छे.

आदिकाळनुं आदिमानवे सर्जेलुं कल्पन के प्रतिरुप समय जतां प्रतीक बने छे अने अे प्रतीक अे पछी पुराकल्पन बनी जाय छे. वाल्मीकिना राम अेक व्यापक के विराट मानवनुं कल्पन छे. वाल्मीकि अेक महामानवनी प्रतिभा रामना रुपे खडी करे छे. कालिदासना “रघुवंश” ना राम “कल्पन” ने बदले “प्रतीक” नी आकृति धारण करे छे. राम सत्य, पत्नीव्रत ने वीरतानुं प्रतीक बने छे. तुलसीना राम अेक “मिथ” बनी जाय छे, अेम राम सामान्य प्रतिनिधिरुप पात्र मटी “अति मानव” बनी जाय छे. आ “मिथ” अे लोकश्रद्धानो विषय छे. म□यकालीन मानसनी आ सरजत छे.

अर्वाचीन युगमां प्राचीन “मिथ” तूटे छे. समाजवाद साम्यवाद धर्म विरुद्ध छे. वैज्ञानिकता, शास्त्रीयता, बुद्धि तर्कवाद प्राचीन अंधश्रद्धा-श्रद्धाने भांगे छे. विज्ञानना चमत्कारोअे “मिथ” ना चमत्कारोने पाछा पाडी दीधा छे ने तेनी पोकळताने खुल्ली करी छे. पण साहित्य कलाक्षेत्रे युगे युगे नवा कविओ नवां

“મિથ” સર્જે છે. પુરાવૃત્તોનાં કલ્પન અર્વાચીન સંવેદનાની અભિવ્યક્તિનાં સાધન બને છે.

આ પુરાકલ્પનનો એ ગૂઢ રાજનૈતિક ભાષા છે. મયયુગીન સામંતશાહીમાં તે લોકોની અંધશ્રદ્ધા હતાં ને શોષણનાં સાધન હતાં. મૂઢીવાદી સમાજરચનામાં “મિથ” નવી રાજનૈતિક ભાષા બની જાય છે, જે પુંજીપતિઓને લાભ કરે છે. લોકશાહીને સમાજવાદી યુગમાં “મિથ” લોકજાગૃતિનાં સાધન બને છે. પ્રાચીન “રામ” આદિવાસી વાનરજાતિના ને કૃષ્ણ ગોપાલક શ્રમજીવીઓના લોકનાયકરુપે રજૂ થાય છે”

“અંગ્રેજી સંજ્ઞા Myth માટે સાહિત્ય ચર્ચાના સંદર્ભમાં આપણે ત્યાં “પુરાણકલ્પન” એવો શબ્દ વપરાવા લાગ્યો છે, પણ એ કાં તો પૂરતો વિચાર ન કર્યાનું, અથવા તો “મિથ” નો અર્થ બરાબર ન સમજવાનું પરિણામ હોય એમ લાગે છે. (સૈદ્ધાન્તિક ચર્ચા વિચારણા કરવાની હોય ત્યાં “ઈમેયજ” ને માટે “કલ્પન” શબ્દ યોજવા જતાં કેવી વૈચારિક મુશ્કેલીઓ ઊભી થાય છે તેનો ધ્યાન પળ આપણને હજી આવ્યો નથી. સગવડ અને સહેલાઈ જ્યાં મૂઠ વસ્તુને હાનિકર્તા હોય ત્યાં તેમનાથી ચેતીને ચાલવું જોઈએ. નહીં તો નવી સંજ્ઞાઓ વિચારણાને નિર્સ્થક ગૂંચવે?”

વ્યાખ્યાવિમર્શ :

પુરાકલ્પન વિષયક સંજ્ઞા વિચાર અને તદવિષયક જુદાં જુદાં તારણોના અભ્યાસની ચર્ચા પછી સ્પષ્ટ કરવા પ્રયત્ન કરીએ પુરાકલ્પન વિશેની અસ્પષ્ટ એવી વ્યાખ્યાઓ વિશે. અસ્પષ્ટ એટલા માટે કે Myth ને કોઈ બેચાર શબ્દોની વ્યાખ્યાના પરિધમાં મૂકી ન શકાય. પુરાકલ્પન વિશે નીચે મુજબનાં તારણો કાઢી શકાય.

એ કથાત્મક અને અબૌદ્ધિક હોય છે.

એમાં નિયતિ અને ઉદ્ભવની કથા કહેવાયેલી હોય છે.

પ્રકૃતિ અને માનવભાગ્ય વિશેની વાતો હોય છે.

એમાં થોડાંક નિઃશંક સત્યો અને થોડી કલ્પનાઓ હોય છે.

માનવીય વિશ્વના આંતરમર્મનો એમાં નિર્દેશ જોવા મળે છે.

એમાં યર્થો અને ચિત્તશક્તિઓની સંડોવણી હોય છે.

તે માનવચેતનાનું એક સ્વાયત્તરુપ છે.

સમગ્ર માનવના અખિલ અનુભવોની અભિવ્યક્તિ છે

તે મનુષ્યની સર્વ પ્રવૃત્તિઓની એક અનિવાર્ય ઉપસંરચના છે.

તે માનવીય જ્ઞાનકોષનો પ્રતીકાત્મક આલેખ છે.

તે અસીમતાનો અનુભવ કરાવતી સ્વાયત્ત ભાવના અને સત્યનું વિલક્ષણ રુપ છે.

તેમાં માનવ સન્મુખ ઊભી થતી સમસ્યાઓનો ઉત્તર રહેલો હોય છે.

તે એક કથા છે, એક વાર્તા કે કાવ્ય છે.

તેમાં વૈયક્તિક ઈચ્છા દૂષિત ચિંતનને સ્થાન નથી.

એમાં પ્રકૃતિ અને જીવનના માહાત્મ્યને સમજવા માટેની શોધ હોય છે.

એ સર્જકના સર્જન (વિષયનો) ઈતિહાસ નથી. તેના રચયિતાનો ઈતિહાસ છે.

અંગ્રેજી શબ્દ Myth ને ગુજરાતી ભાષામાં મળેલા બહુમાન એવા “પુરાકલ્પન” વિશેની આટલી ચર્ચા વિમર્શ પછી તેની ગહનતામાં જશું તો તેમાં ઈતિહાસના તત્ત્વોમાંથી, વાર્તા કથાઓમાંથી કોઈ દેવ કે અદૃશ્ય શક્તિઓ કેન્દ્રમાં જણાશે, કયાંક વઢી સમગ્ર માનવ સમાજ અને તેની સંસ્કૃતિ પ્રત્યે પ્રગટ કે અપ્રગટરુપે જ્ઞાત થવાશે, પરંતુ તેમાં કોઈ કલ્પનાનું પળ સ્થાન અનાયાસે આવી જાય તો તેમાં નવાઈ નહીં અને આ બધું થાય છે વાસ્તવને અનુસંગે. માનવની ઉત્ક્રાંતિ થઈ ત્યારથી પરંપરા પ્રમાણે તેનું શોધન ચાલુ રહ્યું છે. એક સમયે માનવ પાસે કોઈ ભાષા ન હતી, સમૂહમાં રહેવાના કોઈ નિયમો ન હતા ત્યારે લોકો કેવાં કાર્યો કરતાં હશે ? તેની કલ્પના પણ આપણને અતીતમાં કોઈ સ્વપ્નની દુનિયામાં વહેતા કરી મૂકે એમાં શંકા નહીં. યુગોનાં પરિવર્તન થતાં રહ્યાં, દિવસ-રાત ધૂમતો માણસ છત નીચે, ચાર પાઈ પર સૂવા લાગ્યો, માનવ માનવને ઓઠ્ઠતો થયો. સૂર્ય ચંદ્ર પર્વતો સમુદ્ર રાત્રિ વગેરે પ્રકૃતિના રુપને લઈને માનવીએ પુરાણકથાઓ સર્જી. આ બાબતે એન્ડયુ લેગ કહે છે : **Myths are the history of mesn carty development** આ રીતે દંતકથાઓ, પરીકથાઓ, કાલ્પનિક કથાઓ વગેરેનો પ્રવાહ ચાલુ રહ્યો. એક યુગનો અસ્ત એ બીજા યુગનો ઉદય બનતો રહ્યો, પરંતુ જે યુગ અસ્ત થયો તેનાં પાત્રો પ્રતીકોથી સાહિત્યમાં પુરાકલ્પન મહત્ત્વનું અંગ બની રહ્યું, આજના અને આદિમાનવની શરીર રચનામાં કોઈ ફર્ક નથી, આજના સૂર્ય, ચંદ્ર, તારા, નદી, પર્વત, પશુ પંખી અને પ્રકૃતિનાં તત્ત્વોએ આદિમ તત્ત્વોની સમાન જ છે, પરંતુ વાસ્તવિક માનવજીવનની ગતિવિધિઓમાં પરિવર્તન થયું છે. છતાં આજના માનવી પર પણ નિરંજન, ચંદ્રકાન્ત બક્ષી, સુરેશ જોષી વગેરે જેવા સર્જકોના આકરા પ્રહારો રહ્યા છે. શું આદિમાનવ અને આજના માનવજીવનમાં કોઈ તફાવત છે ? તેના ઉત્તરમાં પણ પુરાકલ્પનું મહાત્મ્ય બની રહે છે. હવે આપણે અન્ય કેટલાક અભ્યાસીઓના પુરાકલ્પન વિશેના અભિપ્રાયો ટૂંકમાં જોઈએ :

પશ્ચિમના કેટલાક અભ્યાસીઓ અને આધુનિક અભ્યાસીઓએ આ રીતે પુરાકલ્પન વિશેના તેમના અભિપ્રાયો આપી પુરાકલ્પનના સ્વરુપને સમજવા નવું દ્વાર ખોલી આપે છે જુદા જુદા અભિપ્રાયોને સંકલિત કરતાં Myth વિશેના કેટલાંક રહસ્યો ખુલ્લાં થાય છે અને પુરાકલ્પનની કેટલીક ભેદકરેલાઓને પીછાળી શકાશે. અહીં આપેલા અભિપ્રાયો મુજબ જોઈએ તો પુરાકલ્પન વિશે નીચે મુજબની માહિતી પ્રાપ્ત થાય છે.

❖ **Myth ની પ્રમુખ લાક્ષણિકતાઓ :**

“પુરાકલ્પનની પ્રમુખ લાક્ષણિકતાઓ નીચે પ્રમાણે છે :

પૌરાણિકતા :

પુરાકલ્પન એ પૌરાણિક, આદિમ, પ્રાગૈતિહાસિક કથા, માન્યતા, શ્રદ્ધા, દેવ-દાનવકથા કે ભૂતપ્રેતાદિકથા સાથે સંબંધ છે. પુરાવૃત્ત કથા એ પુરાકલ્પનનો પાયો છે. પ્રાચીન પૌરાણિક કથા વિના પુરાકલ્પન નથી.

ઐતિહાસિકતાનો અભાવ :

पुराकल्पनमां साची ऐतिहासिकता के वास्तविकता होती नथी. पौराणिक श्रद्धा के अंधश्रद्धाना पाया पर रचाता पुराकल्पनने ईतिहास साथे कयांथी बने ? अटले पुराकल्पनमां आवतां राम, कृष्ण, विक्रम, सिद्धराज जयसिंह, बाबरो भूत के वेताल अतिमानवीय ने अमानुषी, अलौकिक ने दिव्य बनी जाय छे. ऐतिहासिक व्यक्तिओ पण दंतकथाने आधारे ज पुराकल्पनना विषय बने छे.

वास्तवको अभाव :

पुराकल्पनमां पुरावृत्तो सत्य के वास्तविक नथी. कोई जीवनदर्शन के मान्यता के श्रद्धाने व्यक्त करवा योजातां रूपको के कल्पनो छे. पुराकल्पनमां आवता चमत्कार अे अवास्तविक ने अवैज्ञानिक मान्यता, अंधश्रद्धा के आस्था (faith) छे. स्वर्ग, नरक, पाताळलोक, देवो, दानवो, प्रेतोनुं अस्तित्व खरेखर कयां छे ? वास्तववाद, लोकशाही, समाजवाद, विज्ञानने अे स्वीकार्य नथी.

कल्पनानी चमत्कृति :

पुराकल्पनमां पुरावृत्त तो पौराणिक साहित्यमांथी मळे छे, पण तेनी साथे संयोजाय छे कल्पना पुरावृत्त + कल्पना – पुराकल्पन पुरावृत्त पर अर्वाचीन कविनी कल्पकता दोडे छे अने सर्जाय छे. पुराकल्पन “भीतमां बारणुं” अे पुरावृत्त अेकममां अेम. जी.वेल्स कल्पनाना रंग पूरे छे.

नवीन जीवनदर्शन के अर्थदर्शन :

पुरावृत्तोमां कोई जीवनदर्शन होय छे ज अे पौराणिक जीवनदर्शनने बदले पुराकल्पन नवो अर्थ के नवुं दर्शन आपे छे.

रिचुअल :

Ritual शब्दमां धर्म, विधि-विधानो, केटलीक रुढिओ, मानव व्यवहारनां क्रियाकांडो, देवकथाओ वगरे आवतां तेनो पुराकल्पन साथे पण कोईक रीते संबंध तो रहेलो छे. जे समाजमां आपणे जीवी रह्या छीअे त्यां अेक या बीजी रीते आ बधुं जोवा मळतु होय छे.

मानस विज्ञान :

पुराकल्पनने युग समाजना आदिम मननुं प्रतिनिधि अंग नथी, पण संपूर्ण जीवन लेखे छे. पुराकल्पन “कहेली कथा नवी, पण अनुभूत सत्य छे” अेवी ब्रोनिसलाव मेलिनोव्स्कीनी मान्यता युगमां आम मनोवैज्ञानिक अर्थधटनरुपे स्तरी “मनोवैज्ञानिक वास्तव” नुं रूप धारण करे छे. आ प्रकारना पुराकल्पनना अभ्यासथी धर्म, नीति, सौन्दर्य, भाषा विशेनो दृष्टिकोण पण बदलायो मनोविज्ञानना अभ्यासे पुराकल्पननी शिकल पलटी नाखवानुं मोटु काम कर्युं छे. मनोगहवरोमां उतरवानो प्रयत्न जेम जेम मनोविज्ञान द्वारा वधुने वधु थतो रह्यो छे तेम तेम मनुष्य आद्यरुपो अने पुराकल्पनो तरफ, तेमां संधरायेली मानवसंवेदनाओ तरफ खेंचायो छे जेनां कारणे मनुष्यना अज्ञात मननां अनेक झळहळतां रुपो आपणी सामे प्रत्यक्ष थयां छे.”

समाज :

“पुराकल्पन अने समाज अे बनेनो भाग्येज पृथकरुपे विचार थई शके. पुराकल्पन जीवनना कोई अेकदा अंशनो

संकेत नथी. अेमां हमणां जोयुं तेम, “रिचुअल” थी मांडीने बीजा अनेक वळांकनो समावेश थयो होय छे. पैलुं “मन” तो पाछुं त्यां खरुं ज ! समये समये मानवीने पडकारता प्रश्नोना तेथी ज कदाच तेमांथी उकेल मळे छे. कलोड लेवी स्ट्राउसे ब्राझिल वगरेमां आदिम प्रजाओ विशे जे कार्य कर्युं छे ते मानवी विशेनी आपणी समजने प्रत्यक्षपणे छेदी नाखे तेवुं छे. तेमणे आवा समाजोने खूब ज दूरना पदार्थो जेवा कह्या छे जो अेनो सतत अभ्यास थाय तो केटलांक अेवां लक्षणो हाथ वगां बने जे समग्र मानव समाजना मूळमां पण जोवा मळे. पुराकल्पनो अेवा वैज्ञानिक अभ्यासनुं भाथुं बनी रहे छे.

ईतिहास :

पुराकल्पननो ईतिहास साथे पण अेक प्रकारे संबंध रह्यो छे. आपणे जाणीअे छीअे के ईतिहास सत्य हकीकत पर आधारित छे, तेनो आलेख योग्य दिशा पकडतो होय छे. थई गयेलां पात्रो अने घटनाओने लेखक भले तेनी कल्पना साथे तेमां फेरफार करतो होय परंतु तेना केन्द्रस्थाने पेलो ईतिहास तो अडीखम ऊभो ज होवो जोईअे, ज्यारे पुराकल्पनमां आगळ जोई गया तेम धर्म, विधिविधानो, परंपराओ, मनोविज्ञान, मानवचेतनाओ के समाज अने तेथी आगळ विचार करीअे तो लोककथाओ, दर्शन शास्त्र, प्रतीको, कल्पन वगरे साथे पण तेनो कोई ने कोई रीते संबंध ओछो वतो पण आवी जतो होय छे.

लोककथा :

पुराकल्पननी जेम “लोकवार्ता” संज्ञा पण अमुक अंशे अद्यापिपर्यंत धूंधळी ज रही छे. परंपरागत, कंठस्थ के मौखिक बधी ज कथाओनो तेथी केटलाक “लोकवार्ता” मां समावेश करे छे. पेन्झर जेवा तो आर्योना आगमन पहेलां भारत जेवा देशमां लोकवार्ता होवानो मत प्रकट करे छे. विश्वभरमां जुदे जुदे नामे ओळखाती लोकवार्ताओ मळी रहे छे.

दर्शनतत्त्व :

पुराकल्पन अने दर्शनशास्त्र वच्चे आम विरोध रहेलो छे. दर्शनशास्त्र विचार अने वार्ताने अलगरुपे जोतुं आव्युं छे तो पुराकल्पन विचार कल्पना – वार्ता – मानव – जगत अे सर्वनुं अेकरुप छे. ज्यां मानवी छे, अेनी चेतना छे त्यां चिंतन – अध्यात्म कोईकने कोईक रुपे रहेवानुं पुराकल्पनना गर्भमां आवां चिंतन-मनन तो अन्य अंशोना संदर्भमां उछरतां रहे छे. अेनी साथे अेन विरोध न थई शके. जे विरोध छे ते दर्शन काव्यशास्त्रनी शुष्कता ने तेनी जडता सामेनो छे, तेना अेकांगीपणा साथेनो छे. शोरर, ज्योर्ज व्हेली अने वेरियर अेल्विन जेवा तो पुराकल्पनमां अेक या बीजारुपे चिंतन के अेकात्मनी ज्ञायने अनिवार्य लेखे छे.”

भाषा

“पुराकल्पन अने भाषा ऊभयनो संबंध पुराकल्पननी प्रभव क्षणथी ज चाल्यो आवे छे बने अेकमेक साथे अेवां गूथायेलो छे के कोई अेकना उद्भव विकासनो ख्याल मेळववो होय तो बीजानो अेनी साथे अनिवार्य पणे विचार करवो पडे. पाछला पगे डग भरतां आपणे अे बनेनां आदि कुळमूळ सुधी

पहोंचीअे, अेमना निर्माणनी प्रक्रिया पामवा प्रयत्न करीअे तो अे बंने वच्चेनो संबंघ केटलो नजीकनो छे ते तरत समजाशे. बंनेनी नीपज मानवसमाजमांथी थई छे, अेक ज धरा उपरथी ते अंकरायां छे, पल्लवित थयां छे. बंनेना खेड खातर पण समान रह्यां छे. भाषाविदो तेथी ज भाषानुं मूळ स्वरूप ज पुराकल्पनीय रह्युं छे अेम कहे छे. अे बंनेमां स्वरूपगत तफावत गमे ते होय, पण अे पाछळ जे मनोविभावना काम करी रही छे अे तो लगभग समान छे.

उपसंहार :

पुराकल्पन विशेनी विविध संज्ञाओ विशे आपणे विशद चर्चा करी अेमां "पुराकल्पन" संज्ञाने लईने आपणे पण आगळ वधीअे छीअे. जटिल लागती पुराकल्पन विशेनी विविध व्याख्याओ विशे चर्चा करी तेमज अेना स्वरूप विशेनो ख्याल मेळवी, केटलाक विद्वानोना अे विशेना अभिप्रायो विशे जोयुं. पुराकल्पननो रिचुअल, मानस विज्ञान, समाज, ईतिहास, लोककथा, दर्शनतत्त्व अने भाषा साथेनो संबंघ केवो रह्यो ते विशे जोयुं.

संदर्भ :

१. पुराकल्पन – डॉ. प्रवीणभाई दरजी
२. सूर्यनुं प्रथम किरण (काव्य संग्रह) – हितेन आनंदपरा
३. साहित्यमीमांसा – डॉ. बहेचरभाई र. पटेल
४. काव्यनुं संवेदन – डॉ. हरिवल्लभ भायाणी
५. **Literary Criticism (1959) - Wimsutt & Brooks**
६. कल्पन : विभावना अने विनियोग – डॉ. नीतिन वडगामा
७. मारा नामने दरवाजे – लाभशंकर ठाकर
८. किंचित् – सुरेश ह. जोषी
९. प्रतीक अने प्रतीकवाद – प्रो. अेफ. सी. डायर्सा
१०. कंकावटी, ओग १९९७, "काव्यमां प्रतीको" – चन्द्रकान्त टोपीवाला
११. लधुनवल विमर्श – डॉ. नरेश वेद
१२. काव्य व्यापार – हरिवल्लभ भायाणी
१३. साहित्यना संगे – डॉ. अनंतराय व. दवे
१४. अेम पण बने (म. खंडेरियानां काव्यो) – सं. डॉ. नीतिन वडगामा
१५. मधुवन (गझलो – नझमोनो संग्रह) – सं. हरीन्द्र दवे